Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2024: 8.058
https://www.srjis.com/issues_data/226
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL DEC-JAN 2024, Vol-12/61
https://doi.org/10.5281/zenodo.10683097

शिक्षा मे समावेशन हेतु शिक्षक के समक्ष चुनौतियाँ एवं पहल (जनजाति विद्यार्थियों के विशेष संदर्भ में)

वर्तिका सिंह,
शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय अमरकंटक मध्य प्रदेश-
डॉ शिखा बनर्जी,
सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय अमरकंटक मध्य प्रदेश

Paper Received On: 12 December 2023
Peer Reviewed On: 28 January 2024
Published On: 01 February 2024

सारांश

शिक्षा में समावेशन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया हैं। जिस प्रक्रिया के माध्यम से एक बच्चा देश का भावी नागरिक बनता हैं। समावेशन विद्यालय के चारों तरफ की वैचारिक ,दार्शनिक, सामाजिक और शैक्षिक ढांचा होता हैं। समावेशन की प्रक्रिया विद्यार्थी को लोकतन्त्र के समान भागीदारी में सक्षम बनाता हैं। साथ ही उनके सीखने एवं आत्मविश्वास को बढ़ावा देता हैं। प्रत्येक समाज में सांस्कृतिक, आर्थिक, जातिगत और लैंगिक आसमानता देखने को मिलती हैं। इन विभिन्न समाज के प्रत्येक बच्चों का समाजीकरण एक सामान्य प्रक्रिया से होकर नहीं गुजरता हैं। अतः उनकी शिक्षा में समावेशन की प्रक्रिया भी एक समान नही होती हैं। आदिवासी विद्यार्थियों की भाषा और दैनिक जीवन की क्रियाकलाप तथा अभिव्यक्ति भिन्न होती हैं। इन विभिन्नताओं को समझना तथा कक्षा-कक्ष में समावेशन की प्रक्रिया का क्रियान्वयन करना एक शिक्षक के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य होता हैं। प्राय: शिक्षक अपनी मान्यताओं के अनुरूप कक्षा मे विद्यार्थियों का स्तरीकरण करता हैं। इस प्रक्रिया में समेकित शिक्षा नही हो पाती और कई बच्चे इससे उपेक्षित महसूस करते हैं। जनजाति विद्यार्थियों के समावेशन हेतु शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक होना बेहद आवश्यक हैं। विद्यार्थियों के दार्शनिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास के लिए अध्यापक अग्रणी भूमिका निभाता हैं। इसके लिए एक अध्यापक से यह अपेक्षा होती हैं कि वह इन तीनों आयामों से भलीभाँति परिचित हो बल्कि इसके प्रति सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली को संचालित करने का बहुआयामी दक्षता रखता हो। ऐसा विद्यालय जिसमें जनजाति समुदाय के विद्यार्थी सम्मलित होते हैं और वह सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा ग्रहण करते है। उस विद्यालय में नियुक्त शिक्षक यदि उसके समुदाय का होता हैं तो उसकी विभिन्न परिस्थितियों को समझते हुए शिक्षण कार्य करने में शिक्षक को विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है। कक्षाओं के भीतर विभिन्न प्रकार के चुनौतियों का समाधान करने के लिए जनजाति विद्यार्थियों को समझने के लिए तथा अनुकूल वातावरण का निर्माण करने के लिए विशेष कौशल तथा आत्मविश्वास को विकसित करना आवश्यक है। इस हेतु शिक्षक के प्रशिक्षण के लिए विशेषज्ञों के सहयोग तथा पर्याप्त साधनों की आवश्यकता होती है। शिक्षा व्यवस्था में जनजाति बच्चों के समावेशन हेतु शिक्षक उनकी भाषा, सभ्यता, संस्कृति

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

विविधताओं और क्षमताओं को समझकर उसके कक्षागत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल एवं सहज बना सकता है तथा अन्य पाठ्यसहगामी गतिविधियों को सम्मलित कर उसके समावेशन को आनंददायक और रोचक बनाया जा सकता है।
प्रस्तुत शोध में इस बात का उल्लेख किया गया है कि किस प्रकार एक शिक्षक आदिवासी विद्यार्थियों के समावेशन हेतु उनकी विभिन्नताओं को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्मलित कर तथा उनके सर्वांगीण विकास का प्रयास कर अपनी बहुआयामी दक्षता का विकास कर सकता है।

मुख्य बिन्दु : *शिक्षा में समावेशन, शिक्षक की चुनौती, पहल, जनजाति विद्यार्थी, विविधता*

प्रस्तावना:शिक्षा से तात्पर्य एक ऐसी शिक्षण प्रक्रिया से है जिसमें निश्चित उदेश्य के प्राप्ति के लिए बालक को नियंत्रित वातवरण में रखते हुये ,निश्चित व्यक्ति द्वारा ,निश्चित पाठ्य क्रम , निश्चित स्थान पर तथा निश्चित समय में दी जाने वाली शिक्षा प्रदान कि जाती है। जिसको ग्रहण कर बालक समाज के विकास में अपनी अग्रणी भूमिका निभाता है । समावेशी शिक्षा या समावेशन शिक्षा से तात्पर्य जो विध्यार्थी शिक्षा के मुख्य धारा से बाहर है। जैसे की जो शारीरिक ,मानसिक रूप से मंद तथा आर्थिक ,सामाजिक रूप से पिछड़े हैं , उन्हें शिक्षा के मुख्य धारा से जोड़ना है । जिसके मध्यम से यह बच्चे सामान्य विद्यार्थी के साथ शिक्षा ग्रहण कर एक समावेशी समाज का निर्माण कर सके। समावेशन शब्द का अपने आप में कुछ खास अर्थ नहीं होता। समावेशन के चारो तरफ जो वैचारिक दार्शनिक, शैक्षिक ढांचा होता है वही समावेशन को परिभाषित करता है। समावेशन कि प्रक्रिया में बच्चे को न केवल लोकतन्त्र का भागीदार बनाया जा सकता है बल्कि यह सीखने एवं विश्वास करने के लिए भी सक्षम बनाया जा सकता है । लोकतन्त्र को बनाए रखने के लिए , दूसरों के साथ रिश्ते बनाना, अंत:क्रिया करना भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है **(एन०सी०एफ़० 2005)।** समावेशी शिक्षा की अवधारणा है मूलत: अक्षम एवं दिव्यांग बच्चों को शैक्षिक अवसरों की समानता, शिक्षा में पूर्ण सहभागिता का अवसर उपलब्ध कराना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संदर्भ में उन्नत एवं उपयोगी पाठ्यचर्या, उत्कृष्ट शिक्षण विधि, सहायक सेवाएँ तथा सामुदायिक सहभागिता को उत्साहित करती है **(मालवीय ,2018)**। समावेशी शिक्षा शिक्षण की एक ऐसी प्रणाली है जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा के मुख्य धारा में शामिल किया जा सकें। इसके अंतर्गत पठन-पाठन के अलावा जनजाति बच्चों के लिये भी बाधा रहित स्कूली माहौल का निर्माण कार्य भी शामिल है **(पाठक, 2015)।** अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा पिछड़ी जनजाति के बच्चों के लिए परिमाणात्मक रूप और गुणात्मक रूप से स्कूल शिक्षा तथा पूर्व स्कूल शिक्षा को सर्वत्र उपलब्ध करवाना तथा उसे सशक्त बनाने में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है । (कृष्णन- भारतीय जाति व्यवस्था और वंचित तथा कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा में चुनौतियाँ)

साधारणत: हम यह अपेक्षा रखते है कि कक्षा-कक्ष में सम्पूर्ण विभिन्नताओं (शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, समाजिक) के बावजूद एक शिक्षक सभी विद्यार्थियों की अलग-अलग योग्यता, आवश्यकता , क्षमता को ध्यान में रखकर शिक्षण-प्रक्रिया को संचालित कर कक्षा में समावेशन के लिए अपने उतरदायित्व को निभायेगा। परंतु अलग-अलग समाज, संस्कृति, परिवेश से आये विद्यार्थी विशेषकर जनजाति विद्यार्थियों की विभिन्नता को समझना एक चुनौती पूर्ण कार्य होता है क्योंकि उनके समाज से समबन्धी अध्यापको की संख्या बहुत कम या लगभग न के बराबर होती है। सभी प्रकार के बच्चों जैसे आर्थिक रूप से कमजोर (गरीब) कामकाजी बच्चों को शामिल कर, सुदूर ग्रामीण बच्चे, घुमंतू जनजातीय के बच्चे, किसी निर्विष्ट स्थान पर रहने वाले बच्चे, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, भाषाई अल्पसंख्यक और सीखने की अक्षमता युक्त बच्चों को समावेशी शिक्षा द्वारा शिक्षित किया जाता है। **(वर्ड एजुकेशन फोरम मीटिंग रिपोर्ट अप्रैल, 2019)** इस प्रकार एक समावेशी शिक्षा में जैसा की यूनिसेफ, युनेस्को की रिपोर्ट एवं एन.सी.एफ- 2005 व एन.सी.एफ.- 2000 में बताया गया है कि समावेशी शिक्षा में दिव्यांग (शारिरिक दिव्यांग, दृष्टि बाधित दिव्यांग , वाक बाधित दिव्यांग, स्वलीनता, सीखने की अक्षमता युक्त दिव्यांग बच्चे, ग्रामीण पृष्ट-भूमि के बच्चे, जनजातीय बच्चे ,घुमंतू समाज के बच्चे,कामकाजी समूह के बच्चे आदि विभिन्न प्रकार के बच्चों को शामिल किया जाता है।

आदिवासी - वर्तमान स्थिति में आदिवासी शब्द का प्रयोग विशिष्ट पर्यावरण में रहने वाले विशिष्ट भाषा बोलने वाले विशिष्ट जीवन पद्धति तथा परम्पराओं से सजे और सदियों से जंगलों-पहाड़ों में जीवन-यापन करते हुये अपने धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों कों सँभालकर रखने वाले मानव समूह का परिचय करा देने के लिए किया जाता है।**(डॉ. विनायक तुमराम –आदिवासी कैन)**

जनजातीय विद्यार्थियों कि शिक्षा से संबन्धित समस्याएँ - भारत में जनजाति से समबन्धित शिक्षा की परिस्थिति भारत में सुधरी है। परन्तु कुछ समस्याएँ अभी तक है जो निम्न प्रकार है -

1 जहां न्याय संगत आधार संरचना एवं विद्यार्थी पंजीकरण भी है वही दूरी एवं निर्धनता के कारण जनजाति क्षेत्रों में विद्यालयों में निरन्तर उपस्थिती की समस्या है।

2 जब कभी जनजातीय छात्र दाखिला लेने में सफल हो जाते है। उन्हें भिन्न प्रकार से शर्मिंदा किये जाता है और उनका मनोबल तोड़ा जाता है। इसके कारणवश विद्यालय छोड़ने की दर बहुत बढ़ जाती है।

3 भारत में अधिकतर जनजातीय समुदाय अपनी मातृभाषा रखते है परन्तु अधिकतर राज्यों में सरकारी क्षेत्रीय भाषा शिक्षा हेतु प्रयोग की जाती है। जो जनजाति बच्चों द्वारा विशेष रूप से शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर समझी नहीं जाती है।

4 जनजातीय बच्चों का संरचनात्मक कक्षा वाले विद्यालय में अपनी प्रकृति से नजदीकी का भाव न होने के कारण सहजता का आभास नहीं करते और इनके कारणवश तत्काल उपलब्ध कराई जाने वाली औपचारिक शिक्षा में उनकी रुचि समाप्त हो जाती है।

5 जनजातीय लोगों में निरक्षरता का एक मुख्य कारण माता-पिता एवं समुदाय का बच्चों की शिक्षा में कम रुचि लेना एवं जनजातीय क्षेत्रों में गुणवात्तापूर्ण स्तर के विद्यालयों का न होना है।

अध्यापक के विभिन्न आयाम –

1- एक शिक्षक समावेशन के विषय में ज्ञान एवं उनके सिद्धांतों के बारे में योग्य प्रशिक्षण होना चाहिए।
2- विशेष अवश्यकता वाले विद्यार्थी के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए।
3- शिक्षक के पास एक अच्छी शैक्षिणक योग्यता तथा अपने विषय से संबन्धित शिक्षणशास्त्रीय ज्ञान होना चाहिए।
4- शिक्षक के अंदर सहयोगात्मक, प्रदर्शन कला और सम्प्रेषण कौशल का विकास होना चाहिए।
5- एक अच्छा समृद्ध व्यावसायिक प्रतिष्ठा होनी चाहिए।
6- शिक्षक के अंदर संवेदनशीलता औए अच्छा परामर्श का कौशल होना चाहिए।

चुनौतियां-

1- जनजातीय विद्यार्थी के व्यक्तिगत आवश्यकता को समझना- विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नता होने के कारण अलग-अलग आवश्यकताओं को समझना और उन्हें व्यावहारिक रूप से क्रियान्वयन करना एक चुनौती पूर्ण कार्य है।

2- जनजातीय विद्यार्थियो के विभिन्न संस्कृति एवं परिवेश से परिचित होना- शिक्षकों के लिए कक्षा में विद्यार्थियों की अलग-अलग संस्कृति और परिवेश से होते हैं प्रत्येक विद्यार्थियों की संस्कृति को समझना उनकी परिवेश को समझना शिक्षकों के समक्ष एक चुनौती पूर्ण कार्य है।

3- पाठ्यचर्या को उनके दैनिक अनुभवों से जोड़ना- प्रत्येक विषय-वस्तु को विद्यार्थियों के दैनिक अनुभवों से से जोड़ना तथा उनकी दैनिक अनुभवों को संज्ञान में लेना एक चुनौती है।

4-एक शिक्षक का शिक्षा के हितकारक के रूप में पूर्ण रूप से स्वतंत्र न होना- शिक्षक को पूर्ण रूप से शिक्षा के प्रत्येक हितकारक के रूप में अपेक्षित होना एक चुनौती है।

5-विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अभिक्षमता स्तर के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया करना- कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थियों के अभिक्षमता स्तर के अनुसार कक्षा को क्रियान्वयन करना शिक्षकों के लिए एक चुनौती पूर्ण कार्य है

6-दूर-दराज विद्यार्थियों को विद्यालय में अनियमित उपस्थिती -विद्यालय से घर की दूरी होने के कारण विद्यार्थी अनियमित रूप से तथा समय से विद्यालय में उपस्थित नहीं हो पाते हैं। उन्हें विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थिति दर्ज करना भी शिक्षकों के लिए एक चुनौती है।

7-विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विभिन्नताओं तथा उनके स्तर को ध्यान में रखकर मूल्यांकन करना- कक्षा में विभिन्न विद्यार्थियों के अभीक्षमता स्तर के अनुसार कक्षा को क्रियान्वयन करने के साथ-साथ प्रत्येक विद्यार्थियों का मूल्यांकन करना भी एक चुनौती है।

8- सम्पूर्ण विद्यालय तथा शिक्षक के साथी शिक्षक का सहयोग न होना- सहयोगात्मक विचारधारा न होने के कारण भी समावेशी शिक्षा में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। क्योंकि समावेशन किसी एक व्यक्ति से संभव नहीं। सहयोगात्मक कार्य न करने से समावेशन की समस्या उत्पन्न होती है

9- संवेदनशीलता एवं जागरूकता का अभाव- कक्षा में असामान्य विद्यार्थियों के प्रति सहयोग संवेगात्मक भावना तथा जागरूकता का अभाव होने के कारण भी समावेशन के लिए एक चुनौती है।

10- प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी होना-वर्तमान समय में प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी समावेशी शिक्षा के लिए एक बड़ी समस्या है क्योंकि समावेशी शिक्षा को क्रियान्वयन करने के लिए प्रशिक्षित शिक्षक पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होने के कारण शिक्षक को पूर्ण रूप से संचालित करने के लिए विशेष समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

11- शिक्षक का पूर्वाग्रह होना- यदि शिक्षकों में यह अवधारणा यदि पहले से बनी हुई है कि असामान्य विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थी की तरह नहीं सीख सकते। तो कक्षा में समावेशन के लिए बाघ उत्पन हो सकती है।

12- शिक्षक अंतरानुशासनीय न होना-समावेशन के लिए शिक्षकों में अंतरानुशासनीय को होना अति आवश्यक है यदि शिक्षक अंतरानुशासनीय नहीं है तो समावेशन के लिए एक चुनौती है

इसमें कोई शक नहीं है कि जरूरतों में विविधता को पूरा करना एक बहुत बड़ी चुनौती है लेकिन सामाजिक संबंधों को बेहतर बनाने के लिए यह एक व्यक्ति विशेष समस्या नहीं है बल्कि प्रणाली के लिए शौक्षणिक चुनौती है इन

चुनौतियों का सामना करने का अर्थ हैं कि प्रणाली में सुधार करना ताकि अध्यापक अपने छात्रों को उनके मुकाम तक पहुंचा सकें अगर वास्तव में समवेशी शिक्षा के जीवन में एक उपलब्धि हासिल हो सकती है। जो आने वाली चुनौतियों , दिक्कतों , दुविधाओं को दूर करने में मददगार होगी और साथ ही वह बदलाव का संकेत को दर्शाएगी।

पहल:

1- समावेशन शिक्षा जागरूकता के लिए शिक्षक को प्रशिक्षित होना चाहिए। जिससे असामान्य विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझ कर एक पूर्ण समावेशी कक्षा का क्रियान्वयन कर सके।

2- जनजातीय छात्रों को समावेशन को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक पक्षधर हो। जिससे समाज की संपूर्ण विद्यार्थियों को शिक्षा की पहुंचे हो ।

3- जो विद्यार्थी शिक्षा के मुख्य धारा से बाहर है उन्हे विद्यालय तक लाने के लिए एक शिक्षक में अच्छा सम्प्रेषण कौशल होना चाहिए।

4- यह आवश्यक है कि शिक्षक कक्षा में विभिन्न योग्यता वाले छात्रों को स्वीकारें और कक्षा में बच्चों को सीखने के मामले में जिसकी जैसी जरूरत उनको वैसी शिक्षा के सिद्धांत को बढ़ावा दें।

5- छात्रों के बीच पाठ्यक्रम के तत्वों को समझने के लिए विभिन्नतापूर्ण राश्ते निकालना।

6- ऐसे विकल्प तैयार हो कि छात्र प्रदर्शित कर सकें कि उन्होनें क्या सीखा है। जैसे छात्रों को उनके पसंद अनुसार लिखित, मौखिक या वैकल्पिक संचार के प्रयोग के आधार पर एक स्व-उत्तर देने का फ़ारमैट बनाया जाना चाहिए।

7- सीखने की प्रक्रिया शिक्षक केंद्र से छात्र केन्द्रित होना चाहिए। छात्र को सक्रिय अन्वेषण के तरफ विकसित होना चाहिए और इसके लिए प्रेरक विचारों को बढ़ावा देने के लिए रणनीति बहुत फायदेमंद शिक्षण विधि साबित हो सकती है। इस रणनीति का प्रयोग करने के लिए शिक्षक को खोजी शिक्षण के जरिये सभी छात्रों को उचित अनुभव ,नियमों के विश्लेषण और सिद्धांत मुहैया कराने की जरूरत है। इसे ध्यान में रखते हुए समावेशी शिक्षण और कक्षा में असमर्थ छात्रों के लिए लचीलापन लाये।

8- शिक्षक कक्षा में सभी छात्रों को अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव प्रदान कराए और सरल भाषा अभिव्यक्ति का प्रयोग करे।

9- विद्यार्थियों के निष्पादन एवं प्रगति आंकलन करने के लिए शिक्षक को एक अच्छा मूल्यांकनकर्ता होना चाहिए।

10-एक शिक्षक के अंदर परामर्श के गुण होना चाहिए। असमान्य विद्यार्थियों की समस्या का समाधान करें विद्यार्थियों के साथ-साथ उनके अभिभावकों को समावेशन की ओर अग्रसित किया जा सके।

11- समावेशन शिक्षा के लिए एक अध्यापक का दृष्टिकोण शिक्षण प्रक्रिया के प्रति सकारात्मक होना चाहिए। यह शिक्षक के अंदर तब विकसित हो सकता है जब वह समावेशन के क्षेत्र में लगातार अभ्यास करते रहें।

12-एक शिक्षक को विद्यार्थी की अवश्यकता को समझने के लिए समय -समय पर कार्यशाला में प्रतिभागी बने जिससे वह विद्यार्थियों के वर्तमान समस्या और अवश्यकता से परचित होते रहे।

निष्कर्ष: शिक्षकों को यह समझना होगा की आदिवासी बच्चों के शिक्षा में समावेशन की चुनौतियाँ अन्य विशेष बच्चों के सम्बन्ध में आने वाली चुनौतियों से बिलकुल अलग है |इन व्यापक चुनौतियों का कोई निश्चित एवं त्वरित समाधान नहीं है |शिक्षकों को आदिवासी बच्चों के प्रति संवेदनशील होते हुए उनके सांस्कृतिक व्यवहारों तथा समुदाय के अनुभवों को शिक्षण –अधिगम प्रक्रिया में शामिल करना चाहिए |भाषा अधिगम के केंद्र में होता है , इस दृष्टि से आदिवासी बच्चों के औपचारिक शिक्षा में सहज समावेशन हेतु शिक्षकों को उस समुदाय की भाषा का ज्ञान तथा बहुभाषिकता के प्रति सम्मान होना चाहिए | 21वीं सदी के आवश्यकताओं एवं चुनौतियों को संबोधित करने की दिशा में एक शिक्षक यह आवश्यक है की वह शिक्षण –अधिगम के पारम्परिक विमर्श जैसे :- शिक्षण- कौशल , कक्षा –प्रबंधन एवं शिक्षणशाश्त्र इत्यादि की सीमा से बाहर निकलकर परानुभूति , विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों के प्रति संवेदनशीलता एवं समावेशन की भावना ,सम्प्रेषण की स्पष्टता जैसे गुणों का संवर्धन कर सकारात्मक पहल करते हुए अपनी बहुआयामी दक्षता का विकास करें |

संदर्भ ग्रंथ सूची

काण्डपाल ,के .(2012)शिक्षा में समावेशन। चुनौती एवं समाधान।

पाठक,के.के.(2015) समवेशी –एक नजर ,इंटरनेशनल मल्टी डिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल ,गोल्डन रिसर्च थात ,4(10)पृ .सं.1-5

देवी,के. (2018). समावेशन शिक्षा में अध्यापकों के उत्तदायित्व एवं भूमिका एक समीक्षा,पिम्ड सेकश्न :साइंस एंड टेक्नॉलजी,4 (7)पृष सं 242-244

Singh, J. I. ,(2016) Inclusive Education in India concept.Need and Challenges, ScholarlY Research Journal For Humanity Science for English Language, 3(13), 3222-3232

राणा,एन. (2019)विद्यालय ढांचे में जंजातीय समुदाय की संस्कृति और सभ्यता के लिए जगह पाठशाला भीतर और बाहर,लर्निंग कर्व अजीम प्रेमजी विश्वविधयालय,167-176

कृष्णन,पी.एस. (2015) भारतीय जाति व्यवस्था और वंचित तथा कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा में चुनौतिया, लर्निंग कर्व ,अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन 27-33

पांडे, जे . (2015) समावेशी शिक्षा नीति के समस्याएं अल्मोड़ा की लमगारा ब्लॉक का अवलोकन लर्निंग कब . अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी पृ .सं .59-61

गुप्ता,एस.पी. (2015)अनुसंधान संदर्शिका संप्रत्यय, कार्य विधि एवं प्रविधि इलाहबाद,शारदा पुस्तक भवन.

सिंह, ए.के. (2017) मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, नई दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास.

गुप्ता, एस.पी. (2018) सांख्यिकी विधियां, इलाहबाद,शारदा पुस्तक भवन .

मंगल, एस.के. (2019) व्यवहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियां, Delhi, PHI Learning private Limited

गोयल, एन., भार्गव, एम.(2011) शोध विधियाँ एवं सांखिकीय अनुप्रयोग,आगरा, राखी प्रकाशन प्रा.लि।

Cite Your Article as:

वर्तिका सिंह & **डॉ शिखा बनर्जी. (**2024). SHIKSHA MAIN SAMAVESHWANHETU SHIKSHK KE SAMKSH CHUNOTIYAN EVM PAHAL (JANJATI VIDHYARTHIYONK KE VISHESH SANDARBH MAIN). Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, 12(61), 148–155. https://doi.org/10.5281/zenodo.10683097